IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 11, Issue 1, January 2024

Impact Factor: 6.421

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi cross ref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

नई शिक्षा नीति में सृजनात्मकता एवं नवाचार

DR. SAURABH VERMA

ASSOCIATE PROFESSOR, DEPT. OF BUSINESS ADMINISTRATION, MJPRU CAMPUS, BAREILLY,

UTTAR PRADESH, INDIA

सार

मनुष्य का जीवन गुणों और प्रतिभाओं का भंडार है और यदि किसी भी मनुष्य के आधारभूत गुणों या ईश्वर प्रदत्त प्रतिभाओं का पूर्ण सदुपयोग उसके जीवन में नहीं किया जाता तो उसके वो गुण और प्रतिभाएं व्यर्थ ही हो जाती हैं। हम अपने बाल्यकाल से एक ऐसी शिक्षा पद्धति की छत्र-छाया में पले-बढ़े जिसमें सब विद्यार्थी एक-दूसरे की देखादेखी कोर्स का चयन करते थे, न उनकी प्रतिभाओं का आकलन शिक्षक करते थे, न ही अभिभावकों की ही दूरदृष्टि इस ओर जाती थी, या तो इंजीनियरिंग या मेडिकल या चार्टर्ड अकाउंटेंट या साधारण ग्रेजुएट होकर नौकरी ढूंढ़ने की प्रथा थी। कुछ लोग सेना में या प्रतियोगिता वाली परीक्षाएं देकर सरकारी नौकरियों में चले जाते थे। न तो मार्गदर्शन किया जाता था कि कैसे अपने गुण या प्रतिभाओं का आकलन करके सही दिशा की ओर जीवन को ले जाना चाहिए, न ही विद्यार्थियों के पास इतना समय था कि वो इस ओर अपनी बुद्धि का प्रयोग कर सकें। वस्तुतः सारा शिक्षण का ढांचा ही कुछ इस प्रकार था कि अधिकांशतः युवा वर्ग दिशाहारा था। शिक्षा प्रणाली कुछ ऐसी थी जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवरोध उत्पन्न करती थी- मूल चिंतन और विचारधारा के विकास में अवरोध, काल्पनिक और नए वैचारिक और मानसिक शक्ति के विकास में अवरोध, मनुष्य की मूलभूत प्रतिभाओं के विकासीकरण में अवरोध। देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए और सजग, विचारशील और नवीनतम आयामों को ग्रहण करने वाले एक सशक्त युवा वर्ग के निर्माण के लिए बहुत आवश्यक था कि विषयों की जानकारी के साथ-साथ बच्चे समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक रूप से सोचना सीखें, नया सोचें, अपने विचारों को विस्तृत करें। शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी केंद्रित, जिज्ञासा, खोज, संवाद के आधार पर लचीली हो, समग्र हो।

नई शिक्षा नीति का लक्ष्य है- शिक्षार्थी का संपूर्ण विकास जिसे साक्षरता,संख्याज्ञान, तार्किकता, समस्या समाधान, नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक मूल्यों के विकास के द्वारा सम्भव किया जा सके।

परिचय

ज्ञान, प्रज्ञा, सत्य की खोज भारत के प्राचीनतम शिक्षा पद्धतियों के आधार हैं जिनकी लौ के प्रकाश में नई शिक्षा पद्धति का ढांचा बहुत संयम और धैर्य से बिल्कुल वैसे ही गढ़ा जा रहा है जैसे कि एक मूर्तिकार अपनी छेनी की हल्की-हल्की चोट पहुँचा कर एक सुंदर मूर्ति का निर्माण करता है। [1,2,3]

भारत को सतत ऊंचाईयों की ओर बढ़ने की दृष्टि से अति आवश्यक है कि भारत का युवा देश की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी आवश्यकताओं, देश की कला, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ठोस ज्ञान प्राप्त करे। आजीविका और वैश्विक पारिस्थितिकी में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों के कारण ये आवश्यक है कि देश का युवा इतना सक्षम हो कि विश्व पटल पर उसके आत्मविश्वास के सधे पांव कभी लड़खड़ाएं नहीं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्यतः 4 भाग हैं और इसके कार्यान्वयन की पूर्णता का लक्ष्य वर्ष 2030 है ताकि वर्ष 2015 में अपनाए गए सतत विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में वर्ष 2030 तक सभी के लिए सार्वभौमिक, गुणवत्तायुक्त सतत शिक्षा और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।
ये चार भाग हैं- स्कूल शिक्षा, उच्चतर शिक्षा, अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दे और क्रियान्वयन की रणनीति।

स्कूली शिक्षा में बदलाव

स्कूल शिक्षा में मुख्य परिवर्तन ये किया जा रहा है जिसमें वर्तमान की 10+2 वाली स्कूल व्यवस्था (जो कि 6 वर्ष की आयु से आरंभ होती थी) को 3 वर्ष से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये नए शैक्षणिक और पाठ्यक्रम के आधार पर 5+3+3+4 की एक नई व्यवस्था का पुनर्गठन किया जाएगा। 3 से 5 वर्ष तक फाउंडेशनल, अगले 3 वर्ष प्रीपरेटरी, अगले 3 वर्ष मिडिल और अंतिम चार वर्ष सेकंडरी ढांचे को दिए जाएंगे।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

3 वर्ष के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देख-भाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई- अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन) की एक मजबूत बुनियाद को इस नई शिक्षा नीति में शामिल किया जा रहा है, जिससे कि सही दिशा में सीखने की सही नींव डाली जा सके। द डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (दीक्षा) पर बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर उच्चतर गुणवत्ता वाले संसाधनों का एक राष्ट्रीय भंडार उपलब्ध कराया जाएगा। स्थानीय पुस्तकालयों में सभी भारतीय और स्थानीय भाषाओं की पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई जाएंगी जिससे बाल्यकाल से ही पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अतिरिक्त भी अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत का विकास हो सके।

स्कूल शिक्षा नीति में इन विभिन्न आयामों पर नए मापदंड लगाए जाएंगे- प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान, ड्रॉप आउट बच्चों की संख्या घटाना और सभी स्तरों पर शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना, विद्यालयों में पाठ्यक्रम और शिक्षण, शिक्षकों के लिए नए निर्णय, समतामूलक और समावेशी शिक्षा, स्कूल कॉम्प्लेक्स /क्लस्टर के माध्यम से कुशल संसाधन और प्रभावी गवर्नेंस, स्कूल की शिक्षा हेतु मानक निर्धारण और प्रमाणन।

उच्चतर शिक्षा में बदलाव

युवाओं के लिए उच्चतर शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य युवा को समाज और देश की समस्याओं के लिए प्रबुद्ध, जागरूक, जानकार और सक्षम बनाना है ताकि युवा नागरिकों का उत्थान कर सकें और समस्याओं के सशक्त समाधान ढूंढ कर और उन समाधानों को कार्यान्वित करके एक प्रगतिशील, सुसंस्कृत, उत्पादक, प्रगतिशील और समृद्ध राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर सकें।

उच्चतर शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न आयामों की ओर ये नई शिक्षा अग्रसर होती है जिसमें मुख्य हैं- गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और महाविद्यालय,संस्थागत पुनर्गठन और समेकन, समग्र और बहु- विषयक शिक्षा, सीखने हेतु सर्वोत्तम वातावरण और छात्रों को सहयोग, प्रेरणादायक, सक्रिय और सक्षम संकाय, शिक्षा में समता का समावेश, भविष्य के अध्यापकों का निर्माण, व्यावसायिक शिक्षा का नवीन रूप, गुणवत्तायुक्त अकादमिक अनुसंधान, उच्चतर शिक्षा की नियामक प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन, उच्चतर शिक्षा संस्थानों में प्रभावी प्रशासन और नेतृत्व।[4,5,6]

वर्तमान शिक्षा प्रणाली और आजीविका और धनार्जन की सक्षमता का एक मापदंड अंग्रेज़ी भाषा भी है जो कि देश के अधिकांशतः युवा वर्ग के आत्मविश्वास की कमर तोड़ कर रख देता है और किसी न किसी पटल पर उनको कमतर साबित कर देता है, चाहे वो युवा कितना भी ज्ञान से भरा हुआ क्यों न हो। नई शिक्षा प्रणाली स्थानीय /भारतीय भाषाओं में शिक्षा या कार्यक्रमों का माध्यम प्रदान करती है।

इसके अतिरिक्त बहु विषयक विश्वविद्यालय और उच्चतर शिक्षा संस्थान (एच.ई.आई- हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स) सुगठित किए जाएंगे। शोध गहन विश्वविद्यालय शोध को महत्व देने वाले होंगे जबकि शिक्षक गहन विश्वविद्यालय गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण के साथ-साथ महत्वपूर्ण अनुसंधान का संचालन भी करेंगे। स्वायत्त डिग्री देने वाले कॉलेज स्नातक शिक्षण पर केंद्रित रहेंगे, ये तीनों ही संस्थान एक निरंतरता के साथ होंगे।

अभी देश में एच.ईआई. का नामकरण विभिन्न नामों से है जिसे मानकों के अनुसार मापदंड पूरा करने पर केवल 'विश्वविद्यालय' के नाम से प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा।

कौशल विकास पर जोर देती नई शिक्षा नीति

भारत में समग्र और बहु विषयक शिक्षा की प्राचीन परंपरा है, ज्ञान का विभिन्न कलाओं के रूप में दर्शन भारतीय चिंतन की देन है जिसे पुनः भारतीय शिक्षा में शामिल किया जाएगा, इसका एक बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव ये होगा कि युवाओं के लिए कभी भी भविष्य में अर्थोपार्जन का कोई रास्ता बंद नहीं होगा और वो अपने संपूर्ण ज्ञान का प्रयोग स्वयं के व्यक्तिगत विकास में, सामाजिक और राष्ट्र के विकास में कर पाएंगे।

उच्चतर शिक्षा संस्थानों को विभिन्न स्नातकोत्तर कार्यक्रमों की छूट दी जाएगी जैसे 3 वर्ष के स्नातक डिग्री वाले विद्यार्थियों के लिए 2 वर्षीय कार्यक्रम, 4 वर्ष के शोध स्नातक विद्यार्थियों के लिए एक वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम और 5 वर्ष का एकीकृत स्नातक कार्यक्रम हो सकते हैं।

सीखने की आकर्षक और सहायक पद्धतियों के लिए विभिन्न पहल की जाएंगी जैसे कि उच्चतर शिक्षा में नई रचनात्मकता लाने के लिए पद्धति में नवाचार और लचीलापन लाना होगा और सी.बी.सी.एस. (चॉयस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम) का संशोधन करना होगा। उसकी जगह एक मानदंड आधारित ग्रेडिंग प्रणाली का निर्माण होगा जो प्रत्येक कार्यक्रम के लिए सीखने के लक्ष्यों के आधार पर

छात्रों की उपलब्धियों का आकलन करेगा जिससे एक निष्पक्ष प्रणाली बन सकेगी।

दूसरा, छात्रों में गुणवत्ता पूर्ण आदान प्रदान हेतु विभिन्न क्लब और गतिविधियां कराई जाएंगी, जिससे कि एक स्वतंत्र माहौल में शिक्षकों का संबंध विद्यार्थियों के मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में भी हो।

तीसरा, आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को आर्थिक सहायता ही नहीं अपितु उनके शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण को बेहतर बनाने हेतु परामर्शदाता नियुक्त किए जाएंगे।

चौथा, ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता के लिए रूपरेखा तैयार करके नवीनीकृत किया जाएगा। और अंत में सारे कार्यक्रमों का यही लक्ष्य होगा कि सभी कार्यक्रम गुणवत्ता के वैश्विक मानकों को प्राप्त कर पाएं, इससे एक बहुत बड़ा देश को लाभ ये होगा कि युवा वर्ग दूसरे देशों की ओर कम आकर्षित होंगे और देश की प्रतिभाओं का सदुपयोग देश के विकास के लिए हो पाएगा।

सशक्त शिक्षा नीति विकास का आधार

अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को भी भारत के शिक्षण संस्थान आकर्षित करेंगे और भारत विश्वगुरु के रूप में अपनी नई पहचान बना पाएगा। युवा वर्ग का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वो वैश्विक स्तर पर विभिन्न चुनौतियों का सामना निर्भीकता से कर पाएंगे। किसी भी देश के विकास, संपन्नता और सुदृढ़ सांस्कृतिक विकास का आधार सशक्त शिक्षा नीति होती है और नई शिक्षा नीति ऐसे सभी पहलुओं को लेकर चलेगी जिससे कि सारे ऊंचे मानकों पर स्वयं को स्थापित कर सके।

भारत की नई शिक्षा नीति का विज़न युवा वर्ग के व्यक्तित्व का विकास इस प्रकार करना है कि उनमें अपने मौलिक दायित्वों, संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव, बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न हो सके। सही मायने में वो वैश्विक नागरिक बनकर अपने ज्ञान, कौशल, मूल्यों का सदुपयोग करते हुए देश का नाम सतत ऊंचा कर सकें और साथ ही स्वयं भी गौरवान्वित हो सकें। [7,8,9]

विचार-विमर्श

आधुनिक भारत में नई शिक्षा नीति का विशिष्ट महत्व है। इनसे रचनात्मक और नवाचार को महत्व मिलेगा प्रस्तुत शोधपत्र में उच्च शिक्षा मंत्रालय के द्वारा जारी शिक्षा नीति के बारे में बताया गया है। समय के साथ शिक्षा नीति में परिवर्तन आवश्यक होता है ताकि देश की उन्नति सही तरीके से और तेजी से हो सके। इसी चीज को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति को 34 वर्षो के बाद लाया गया है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य पालको को केवल किताबी ज्ञान देना नहीं है बल्कि उन्हें व्यवहारिक ज्ञान भी देकर उनकी मानसिक बौद्धिक क्षमता को और भी ज्यादा प्रबल बनाना है शिक्षा किसी भी देश और समाज के विकास की महत्वपूर्ण आधार होता है। शिक्षा के बलबूते ही किसी भी देश का विकास तेजी से किया जा सकता है। हालांकि समय के साथ-साथ हर चीजों में बदलाव आता है और उसके अनुसार शिक्षा में भी बदलाव किया जाना चाहिए क्योंकि पहले समय में टेक्नोलॉजी का इतना विकास नहीं हुआ था लेकिन अब दिन प्रतिदिन टेक्नोलॉजी का विकास होते जा रहा है, लोग मॉडर्न टेक्नोलॉजी की और कदम बढ़ा रहे है। ऐसे में बालकों को न केवल किताबी ज्ञान बल्कि उन्हें व्यवहारिक ज्ञान और टेक्निकल ज्ञान भी दिया जाना चाहिए ताकि अपनी योग्यताओं को बढ़ा सके और उसके बलबूते अपने भविष्य को बेहतर बना सके। इसी बात को ध्यान में रखते हुए साल 2020 को संसद में नई शिक्षा नीति को लाने के लिए बिल पास किया गया। यह स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। इससे पहले दो बार शिक्षण के तरीके से बदलाव हो चुका है पहला इंदिरा गांधी के दौरान और दूसरा राजीव गाधी के दौरान बच्चों को शिक्षा देने के लिए इस नई शिक्षा नीति के बारे में हर बच्चे और उनके माता पिता की जानकारी होनी चाहिए। इस शिक्षा के माध्यम से बच्चों के मन में नए-नए चीजों को सीखने के प्रति रुचि जगाना है। ताकि बच्चे जीवन में अपनी योग्यताओं के बलबूते एक अच्छे भविष्य का निर्माण कर सके। इसके अतिरिक्त अपने मातृभाषा को बढ़ावा देना भी इस शिक्षा नीति का उद्देश्य है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा के पाठ्यक्रम को 5$3$3$4 के मॉडल में तैयार किया पहले यह 10$2 के अनुसार था। इस मॉडल के अनुसार प्रथम 5 वर्षों को फाउंडेशन स्टेज के रूप में रखा गया है, जिसका उद्देश्य के बेहतरीन भविष्य के लिए मजबूत नींव को तैयार करना है। इन 5 वर्षों के पाठ्यक्रम को एनसीईआरटी के द्वारा तैयार किया जाएगा। इसमें प्राइमरी के 3 और पहली और दूसरी कक्षाओं को सम्मिलित किया जाएगा। इस नई मॉडल के कारण बच्चों के लिए किताबों का बोझ हल्का हो जाएगा अब वे आनंद लेते हुए सीख पाएंगे। इसके अगले 3 वर्षों में तीसरी, चैथी और पाँचवी कक्षाओं को शामिल किया गया है, जिसका उद्देश्य बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करना है और इन कक्षाओं के बच्चों को गणित, कला, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाया आएगा। इसके बाद के 3 वर्षों को मध्यम स्तर की तरह माना जाएगा, जिसमे 6, 7 और 8 वी कक्षाओं को शामिल किया जाएगा। इन कक्षाओं के बालकों को एक निश्चित पाठयक्रम के अनुसार पढ़ाया जाएगा। इतना ही नहीं इन पाहयक्रम के अतिरिक्त बच्चों को टेक्निकल ज्ञान भी दिए जाएंगे। बच्चों को

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

कोडिंग भी सिखाया जाएगा, जिससे वे भी चाइना के बच्चों की तरह ही छोटी उम्र में ही सॉफ्टवेयर और एप बनाना सीख पाएंगे। आगे के 9वी से 12वी तक की कक्षाओं को अंतिम स्तर में रखा जाएगा, जिसके दौरान बच्चे अपने मनपसंद विषयों को अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर पाए। इस तरीके से नई शिक्षा नीति के माध्यम से न केवल बालकों के पाठ्यक्रम में बदलाव होगा बल्कि बच्चों के शिक्षण के तरीके में भी सुधार है।[10,11,12]

नई शिक्षा नीति को नई धार देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति सिर्फ एक परिपत्र नहीं है बल्कि इसका क्रियान्वयन एक महायज्ञ की तरह है और इसके लिए सभी हितग्राहियों की मजबूत इच्छाशक्ति और सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होगी। क्योंकि नई शिक्षा नीति में क्या सोचना है' के बजाय 'कैसे सोचना है' पर बल दिया गया है। और इसलिए नई शिक्षा नीति की देश भर में व्यापक चर्चा हो रही है। अलग-अलग क्षेत्र के लोग, अलग-अलग विचारधाराओं के लोग, अपने विचार प्रकट कर रहे हैं और इसकी समीक्षा कर रहे हैं। चर्चा जितनी ज्यादा होगी, उतना ही लाभ देश की शिक्षा व्यवस्था को मिलेगा। नई शिक्षा नीति में कोशिश होगी कि सीखने के लिए जिज्ञासा, खोज और चर्चा आधारित और विश्लेषण आधारित तरीकों पर जोर दिया जाए। इससे बच्चों में सीखने की ललक बढ़ेगी और उनके क्लास में उनकी भागीदारी भी बढ़ेगी। इस पर तो सभी एकमत होंगे किबच्चों के घर की बोली और स्कूल में पढ़ाई की भाषा एक ही होने से बच्चों के सीखने की गति बेहतर होती है। और यही कारण है इस शिक्षा नीति में जहां तक संभव हो, पांचवीं कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा में ही पढ़ाने पर सहमति दी गई है।

इससे बच्चों की नींव तो मजबूत होगी ही, उनकी आगे की पढ़ाई के लिए भी उनका आधार और मजबूत होगा। रिसर्च बताती हैं कि मातृभाषा में शुरुआती शिक्षा से बच्चों के दिमाग का पूर्ण विकास होता है। उनकी तर्क एवं विश्लेषण क्षमता बढ़ती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों के सम्मान का भी विशेष ध्यान रखा गया है। एक प्रयास यह भी है कि भारत का जो टैलेंट है, वह भारत में ही रहकर आने वाली पीढ़ियों का विकास करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर बहुत जोर है। वे अपनी स्किल्स लगातार अपडेट करते रहें, इस पर बहुत जोर है। __ मातृभाषा की प्रतिबद्धता हम सभी जानते हैं कि बेहतर संवाद के लिए मातृभाषा अहम् है। और इसलिए दुनिया के सभी विकसित देशों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषाएं रही हैं। अनुभव बताते हैं कि बच्चा मातृभाषा में शिक्षा को आसानी से ग्रहण करता हैमातृभाषा के माध्यम से शिक्षा हासिल करने वाले विद्यार्थी की अधिगम क्षमता ज्यादा होती है। अपनी भाषा के साथ जो मजबूत मनोबल जुड़ा होता है उससे भी बच्चे के व्यक्तित्व विकास में इजा होता है उसकी तार्किक दृष्टि भी विकसित होती है। अध्ययन बताते हैं कि मातृभाषा में बच्चे का शिक्षण उसके मानसिक, भावनात्मक और नैतिक विकास को भी प्रभावित करता है। मातृभाषा में शिक्षण सरल और सहज बन जाता है

सहज बन जाता हैभाषा और गणित का मेल भाषा और गणित को नई नीति में प्राथमिकता मिलना बच्चों में लेखन के कौशल और नवाचार का संचार करेगा। सृजनात्मक गतिविधियों का वातावरण पैदा करेगा। शिक्षण के परम्परागत तौर-तरीकों को नई टैक्नोलॉजी के जरिए नवोन्मेष के साथ कहानी, नाटक, समूह चर्चाएं, लेखन और स्मार्ट डिसप्ले बोर्ड, अध्ययन, अध्यापन और संवाद की नई संस्कृति का विकास नई शिक्षा नीति को वाकई नया तो बनाता है। तकनीकी के इस्तेमाल को प्रोत्साहित करने की पहल कोरोना संकट के कारण नई नीति को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में ले जायेगी। इसके लिए कंप्यूटर, लैपटॉप व फोन आदि के जरिए शिक्षण को रोचक बनाने में टैक्नोलॉजी शिक्षा के भावी परिदृश्य को बहुत हद तक बदल भी देगी|[13,14,15]

नवाचार एवं अनुसंधान पर जोर

भारत सुपर पावर बनने के अपने सपने को साकार कर सकता है। इस महान उद्देश्य को पाने की दिशा में विज्ञान, तकनीक और अकादमिक क्षेत्रों में नवाचार और अनुसंधान करने के अभियान को तीव्र करना होगा। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आधार बनने वाली इस नयी शिक्षा नीति से इस दिशा में बड़ी उम्मीद हैनई शिक्षा नीति के साथ जुड़े नए आयाम, नए मुकाम हासिल कराने में महती भूमिका निभाएंगे। नई शिक्षा नीति जिस तरह से मातृ भाषा के प्रति प्रतिबद्धता के साथ नए भारत के निर्माण का आधार प्रस्तुत करती हैइससे नव-सृजन और नवाचारों के जरिए समाज में नए प्रतिमान उभरेंगे। मातृभाषा जब शिक्षा का माध्यम बनेगी तो मौलिकता समाज में रचनात्मकता का अभियान छेड़ेगी। नई नीति में शिक्षा अधिकार कानून के नए क्षैतिजों का विस्तार समाज के कमजोर तबकों को मुख्य धारा में समावेशित करने के नए अवसर उपलब्ध करायेगाशिक्षा को सतत् विकास व ज्ञानवान समाज बनाने की ओर उन्मुख करेगा।

क्या लड़कियों की स्कूल वापसी सुनिश्चित होगी?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मुताबिक, हर साल 16.88 प्रतिशत लड़कियां आठवीं के बाद स्कूल छोड़ देती हैं। इनमें से कई लड़कियां कम उम्र में शादी करने के लिए मजबूर की जाती हैं। कम उम्र में मां बनने की वजह से कई लड़कियों की असमय मौत हो जाती हैं। मगर विश्लेषकों के अनुसार, इन सभी समस्याओंकी शुरुआत उस वक्त होती है जब किसी लड़की को सातवीं-आठवीं के बाद स्कूल छोड़ना पड़ता है। सरकार बीते कई दशकों से इस समस्या से निपटने की कोशिश कर रही है, लेकिन समस्या जस

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

की तस बनी हुई है। वहीं कोरोना वायरस महामारी लड़कियों को स्कूल से और दूर करती दिख रही है। ऐसे समय में केंद्र सरकार की ओर से लाई गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक ताजा हवा के झोंके जैसी हैनई शिक्षा नीति के तहत लड़कियों और ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए 'लिंग समावेशन निधि' का गठन किया जाएगा

सुधार की आस अभी तक शासकीय विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा न होने के कारण वे पिछड़ते गए और निजी विद्यालय नर्सरी कक्षाएं चलाकर बच्चों को अपनी ओर ले जाने में रूल हुए। नई नीति में 15 वर्ष (5+3+3+4) की प्राथमिक शिक्षा कर दी गई है। तीन से आठ वर्ष के बच्चे (नर्सरी से कक्षा 2 तक) पूर्व-प्राथमिक के नाम से पढ़ेंगे। इसे बुनियादी शिक्षा भी कहा गया है। यह लचीली और सहज और खेलकूद पर आधारित होगी, बच्चों को बचपन से ही तीन भाषाएं सिखाने का प्रावधान किया गया है।[16]

परिणाम

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराएं इस बात की शिनाख़्त करती है कि एक व्यापक और एकीकृत शिक्षा प्रणाली जीवन, व्यवसाय और समाज में प्रभावी एवं नागरिक दायित्व बोध का विकास करती है। जिसके लिए लिबरल आर्टस नए जमाने की नयी विद्या के तौर पर उभरा है। जो विज्ञान, तकनीक, इंजिनियरिंग और गणित के साथ मानविकी तथा कला को एकीकृत करने वाला दृष्टिकोण है। नई शिक्षा नीति-2020 का उददेश्य भारत को एक ज्ञानमय समाज में रुपांतरित करना है। भारत दुनियां का सबसे युवा राष्ट्र है। अपनी इस युवा कुशल श्रम-शक्ति का सदुपयोग कर भारत सुपरपावर बनने में अपने युवाओं को नये कौशलों और नये ज्ञान से लैस होकर अपने इस महान स्वप्न को साकार कर सकता है। इस महान उद्देश्य को पाने की दिशा में विज्ञान, तकनीक और अकादमिक क्षेत्रों में नवाचार और अनुसंधान करने के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आधार तैयार करने में नयी शिक्षा नीति मील का पत्थर साबित होगी। नई राष्ट्रय शिक्षा नीति में लिबरल आर्टस को विशेष तरजीह दी गई है। वैसे तो लिबरल आर्ट्स दुनिया की पुरानी विद्याओं में मौजूद रहा है। यह एक तरह का संतुलित मिश्रण है। जिसमें इतिहास, भाषा, मानविकी, संगीत, दर्शन, मनोविज्ञान और सामान्य गणित जैसे विषय शामिल है। वास्तव में यह समग्र समझ के विकास का नज़रिया है। लिबरल आर्ट्स शिक्षा का एक ऐसा उभरता क्षेत्र है जो व्यावसायिक मूल्यों, सिद्धांतों और आवश्यक प्रबंधन तथा कौशलों का तरल सम्मिश्रण तैयार करता है। मनुष्य को अपनी समसामयिक चुनौतियों से निपटने और आगे बढ़ने के विकल्प सुझाता है। लिबरल आर्ट्स युवाओं को ऐसे मूल्यों से संपोषित करता है जो समेंकित दृष्टिकोण के साथ पर्याप्त संभावनाओं को उकेरने की दिशा में प्रेरित करते है। फांडेशन के साथ स्पेशलाइजेशन लिबरल आर्ट्स की विशेषता है। लिबरल आर्टस अंतर्संबंधों को समझने की दृष्टि प्रदान करता हैं। व्यक्ति की आंतरिक क्षमताओं को विकसित कर अपार संभावनाओं को खोलता है। लिबरल आर्ट्स हमें स्वयं को और दुनियां को समझने की दृष्टि प्रदान करता है। सामान्य कौशल ओर तार्किक सोच पैदा करता है। मानव मस्तिष्क को समाजोपयोगी बनाने के लिए लिबरल आर्ट्स एक बेहतरीन विद्या है। यह हमारे सोचने के ढ़ंग को उदार बनाता है, लचीला बनाता है, व्यवस्थित बनाता है और सटीक अनुमानों की तरफ बढ़ाता है तथा बुद्धिमता का विकास करता है। लिबरल आर्ट्स ऐसी कला है जो हमें उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग की दृष्टि प्रदान करती है।

चुनौतियों को अवसरों की तरह देखने का साहस प्रदान करती है। स्वयं के सम्मुख सवालों को तार्किक संबोधन देने की क्षमता प्रदान करती है और मुखर अभिव्यक्ति की शैली से लैस रखती है। ज्ञान, विज्ञान, कला, प्रंबंधन व मानविकी की सभी धाराओं से जुड़े विषयों का अंतर्विषयी दृष्टिकोण से ज्ञान हासिल करना लिबरल आटर्स का उददेश्य है। जो व्यक्ति में यह दृष्टि विकसित करने में मदद करता है कि हमें अपने अधीनस्थों और साथियों की शिक्षा, कौशल और क्षमता का किस तरह बेहतर सदुपयोग करना हैं। लिबरल आर्टस उदार परिप्रेक्ष्य में समावेशी ढंग का व्यवहारिक मॉडल विकसित करने में मदद करता हैं। वास्तव में यह विषय नहीं विषयों का समूह है, अंतर्विषयी समझ का एक परिप्रेक्ष्य है। जो मानवीय बुनियादी समझ को व्यापक बनाता है। बदलते परिदृश्य में अनुकूलन कर क्षमताओं को अधिक परिणामदायक बनाने वाला दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह विज्ञान और मानविकी दोनों का संयुग्मन है। समाज को शिक्षित और प्रशिक्षित करने का एक खास नजरिया है। जो सामाजिक जटिलताओं, विविधताओं और नव-परवर्तनों को सम्यक दृष्टि से सम्बोधित करता है। इस खास कौशल का विकास कर लोगों को जिम्मेदार नागरिक बनाने में मदद मिलती है।

नई शिक्षा नीति का यह नया आयाम शिक्षा को सतत् विकास और एक ज्ञानवान समाज के निर्माण की ओर उन्मुख करने में मदद करेगा। विज्ञान, भाषा और गणित पर विशेष जोर देने वाली यह नीति बच्चों में लेखन कौशल बढाने वाले नवाचार पर विशेष जोर देती है। जिस हेतु सप्ताहन्त में मेले, प्रदर्शनी, दिवार-अखबार जैसी रचनात्मक गतिविधियों के आयोजन पर विशेष फोकस की दिशा में परम्रागत गतिविधियों के पुर्नःप्रयोग की तैयारी नयी नीति का नया आयाम है। जिसमें कहानी सुनाना, नाटक खेलना, समूह चर्चाएं करना, लेखन और चित्रों के जरिए अध्ययन और संवाद की नई शिक्षण संस्कृति विकसित करना, नई शिक्षा नीति का लक्ष्य है। नई नीति के तहत टैक्नोलॉजी के जरिए ऑलाइन शिक्षण को रोचक बनाने की अहम कवायद होगी। बहुभाषिकता और बहुवैषयिकता को अध्ययन का आधार बनाने से लिबरल आर्टस का परिप्रेक्ष्य मजबूत बनेगा।[14,15,16]

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराएं इस बात की शिनाख्त करती है कि एक व्यापक और एकीकृत शिक्षा प्रणाली जीवन, व्यवसाय और समाज में प्रभावी एवं नागरिक दायित्व बोध का विकास करती है। जिसके लिए लिबरल आर्टस नए जमाने की नयी विद्या के तौर पर

उभरा है। जो विज्ञान, तकनीक, इंजिनियरिंग और गणित के साथ मानविकी तथा कला को एकीकृत करने वाला दृष्टिकोण है। इस व्यापक समन्वित लिबरल दृष्टिकोण में सीखने की आनन्ददायी प्रक्रिया के साथ आलोचनात्मक उच्च स्तरीय चिंतन, गहन शिक्षण, विषय वस्तु की दक्षता, समस्या समाधान, टीम भवना और संचार कौशल सब एक साथ शामिल रहते है। यह भविष्योन्मुखी रोजगार के परिदृश्य को समझने में विशेष सहायक है और युवाओं को पेशेवर ढंग से तैयार करता है। उन्हें पेशेवर भूमिकाओं के साथ पेशे के अन्दर-बाहर अन्य सामाजिक-राजनैतिक भूमिकाओं के निवर्हन हेतु सक्षम बनाता है। यह समसामयिक समस्याओं के समाधान में तो सहायक है ही भविष्य के दिशा निर्धारण में भी मार्गदर्शक बनता है।

लिबरल आर्ट्स अध्ययन के दौरान आप जो कौशल और ज्ञान हासिल करते हैं वो आपको अपनी पसन्द का कैरिअर खोजने और बनाने में मदद करता है। लिबरल दृष्टिकोण आपको विश्लेषणात्मक बनाते हुए सकारात्मक-आलोचना की दृष्टि भी देता है। मौजूदा परिदृश्य जैसे हालातों में यह कैरिअर की अनिश्चितताओं के लिये आपको तैयार रखता है, एक कैरियर से दूसरे में शिफट करने में मदद करता हैं। लेखन, बातचीत, प्रजेनटेशन, सहयोग लेना व देना और रचनात्मक गतिविधियों के लिए तैयार करता है। यह सांस्कृतिक समझ का विस्तार कर उसकी सामाजिक पूंजी बढ़ाने में मददगार बनता है। नेतृत्व करने की जिज्ञासा पैदा करता है। पहल करने की क्षमता का विकास करता है और उत्साह पैदा करता है। अपने कार्य-क्षेत्र में नवाचार की नई दृष्टि देता है।

लिबरल आर्ट्स शिक्षा रचनात्मक व्यक्तित्व तैयार करती है। आज के बाजार प्रधान युग को इसकी बेहद जरूरत है। व्यवसायिक जगत में ऐसे व्यक्तित्व अनन्त संभावनाएं खोज ही लाते हैं। लिबरल आर्टस में मुख्यधारा के साथ पत्रकारिता, एक्सटेंशन, जनसंपर्क, लेखन, विधि, राजनीति, सामाजिक-कार्य, प्रबंधन और मार्केटिंग जैसे कैरिअर साथ-साथ लेकर चला जा सकता हैं। शोध, विश्लेषण, सलाह, सोशल-मीड़िया, मीडिया, विज्ञापन, जनसंपर्क, शिक्षण और सामाजिक दायित्व के क्षेत्र लिबरल आर्ट्स के दक्ष स्नातकों को अनेकानेक संभावनाएं प्रदान करते हैं। 21वीं सदी में दुनियां उद्यमिता के नए उभार खोज रही है। ऐसी स्थितियों में लिबरल आर्ट्स के विषय उद्यमिता को नये क्षैतिज प्रदान करने वाले हो सकते हैं। जैसे सांस्कृतिक उद्यमिता का क्षेत्र एक नया और उभरता कैरियर है।

जैसे-जैसे टैक्नोलॉजी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समाज को संचालित करने की तरफ बढ़ रही है वैसे-वैसे इमोशनल इंटेलिजेशिया भविष्य के समाज की महती जरुरत बनेगा जिसके लिए लिबरल आर्ट्स जैसे शिक्षा के नए क्षेत्र महत्वपूर्ण बनेंगे। लिबरल आर्ट्स सोचने, आलोचना करने और दूसरों को अपने पक्ष में राज़ी करने की क्षमता बढ़ाने की कला है। लिबरल आर्ट्स हमारे लिखने, पढ़ने, बोलने और तार्किक ढ़ंग से सोचने के कौशल को बढ़ा देते हैं। लिबरल आर्टस का लाभ लेकर भारत अपनी युवा शक्ति को सृजनात्मक जनशक्ति के रुप में बदलकर ज्ञानमय-समाज की दिशा में बढ़कर नयी शिक्षा नीति के सहारे नयी सदी को भारत की सदी बना सकता हैं। लिबरल आर्ट्स कल्पनाओं को विचार में विस्तृत करने की कला है और विचार ही विवेक का विकास करते है तथा विवेक विज्ञान की दिशा में बढ़ाता है। अंततः विज्ञान ही प्रोद्यौगिकी और प्रयोगों के सहारे सभ्यता के विकास, सुख-सुविधाओं और एक सुन्दर समरस संसार बनाने का रास्ता खोजता है। यही मानव कल्याण की समुचित दिशा भी है। जिसमें उदार विद्याएं बहुत काम आयेंगी।

निष्कर्ष

सामाजिक-आर्थिक विकास की नई जमीन तैयार कर रही भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आज बड़े पैमाने पर कुशल और सक्षम पेशेवरों की आवश्यकता है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए यह जरूरी शर्त है। यह आवश्यकता तभी पूरी होगी जब हम एक श्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली कायम करें। शिक्षा में यह क्षमता है कि वह किसी राष्ट्र को वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर सकती है। जॉन डी रॉकफेलर ने कहा था कि अच्छा प्रबंधन औसत लोगों को यह दिखाता है कि श्रेष्ठ लोगों की तरह काम कैसे किया जाता है। शिक्षा जगत में इधर सकारात्मक बात यह हुई है कि हम न केवल नवाचार (इनोवेशन) के महत्व को समझने लगे है बल्कि दैनिक व्यवहार में इसे लाने का गंभीर प्रयास भी करने लगे हैं।

शिक्षकों की जवाबदेही

हम अब परिणाम आधारित कार्यशैली अपना रहे हैं, हालांकि इस क्षेत्र में काफी कुछ किए जाने की आवश्यकता है। इसीलिए नई शिक्षा नीति के तहत स्कूली व उच्च शिक्षा में शोध, नवाचार और सृजनात्मक वातावरण को बढ़ावा देने के गंभीर प्रयास किए गए हैं। नई शिक्षा नीति भारत केंद्रित है जिसमें हमारी गौरवमयी संस्कृति और मानवीय मूल्यों के संरक्षण-संवर्धन पर काफी जोर है। हमारी संस्कृति अध्यात्म की एक निरंतर बहती धारा है जिसे ऋषियों-मुनियों, संतों और सूफियों ने अपने पवित्र जीवन दर्शन से लगातार सींचा है। नवाचार के माध्यम से हमें उसी जीवन दर्शन को न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में प्रचारित-प्रसारित करना है। हर क्षेत्र में इनोवेशन की आवश्यकता है। भारत समेत पूरा विश्व आज मूल्यों के संकट का सामना कर रहा है। ब्रिटिश काल के दौरान मूल्यों की जो गिरावट शुरू हुई वह आज भी जारी है। उस समय भारत के बचाव में आए महात्मा गांधी, राजेंद्र प्रसाद, सुभाष चंद्र बोस और सरदार पटेल सत्य, अहिंसा, त्याग, विनम्रता, समानता जैसे मूल्य लेकर आए। आजादी के 70 वर्ष बाद प्रभावी प्रबंधन और बेहतर विकास के लिए उन्हीं मूल्यों पर वापस जाने की आवश्यकता है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

नई शिक्षा नीति में उन्हीं मूल्यों को जीवन में फिर से अहम जगह देने की कोशिश की गई है। नव प्रवर्तन से हम शिक्षा में इन श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का समावेश कर श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं। नवाचार युक्त शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना है। नई शिक्षा नीति के माध्यम से हम विद्यार्थियों को यह सिखाने में कामयाब होंगे कि एक जीवंत समाज के लिए हमारे स्वास्थ्य, हमारे कार्यों और प्रकृति के बीच सामंजस्य आवश्यक है। शैक्षिक बदलाव में सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे एक करोड़ से अधिक शिक्षकों पर है। हरेक शिक्षक में नवाचार की संभावनाएं मौजूद होती हैं, लेकिन औसत शिक्षक यह मानकर चलता है कि उसका काम पाठ्यक्रम पढ़ा देना और बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना भर है, जबकि उसका असल काम बच्चे की उत्सुकता का विकास करना है।[15]

मूल रूप से अध्यापक होने के कारण मैं यह सदैव महसूस करता हूं कि शिक्षक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बच्चों को न केवल सीखने के लिए उत्साहित करना है बल्कि परिणाम आधारित अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना भी है। आज एक ऐसा वातावरण आवश्यक है, जो बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए उत्साहित करता हो, उन्हें गलतियों से सीखने के अवसर देता हो और जोखिम उठाने के लिए प्रेरित करता हो। भारतीय ज्ञान-परंपरा के गुरुकुल सदियों से उत्साहपूर्ण वातावरण प्रदान करते आ रहे हैं। आज इस माहौल को दोबारा तैयार करने के लिए समर्पित दूरदर्शिता वाले दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह संभव हो सकेगा एक नवाचार युक्त इकोसिस्टम के जरिए। इस इकोसिस्टम के अभाव में नवाचार मात्र एक शब्द बन कर रह जाएगा और हम शैक्षिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियों से वंचित रह जाएंगे।

आज अधिकतर कक्षाओं में पठन-पाठन की प्रक्रिया जानकारी के हस्तांतरण तक सीमित रहती है। नई शिक्षा नीति में हम अध्ययन-अध्यापन को प्रयोग, अनुसंधान और अवलोकन तक ले जाने का प्रयास करेंगे। कक्षा में ऐसी गतिविधियां हों जो बच्चों को रोचक लगें, जिन्हें सोचना, समझना और समझाना पड़े। हम नवाचार के माध्यम से सरकारी स्कूलों में ड्रॉपआउट की संख्या कम करना चाहते हैं! बच्चों को शारीरिक रूप से फिट रखना है। विज्ञान और गणित में उनकी रुचि को न केवल बढ़ाना है बल्कि उनके प्रदर्शन में व्यापक सुधार करना है। नई प्रौद्योगिकी, नए ज्ञान-विज्ञान को अत्यंत रुचिकर रूप में प्रस्तुत करना, बच्चों के भीतर प्रश्न पूछने का भाव जगाकर उनका समग्र विकास करना नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों में है।

इस नीति का मकसद बच्चों को इस योग्य बनाना है कि वे देश के लिए सोचें। स्टार्ट अप के माध्यम से उनके भीतर उद्यमिता विकसित करना भी इसका एक जरूरी हिस्सा है। इसके अलावा इसमें अपशिष्ट प्रबंधन, वायु प्रदूषण, जल संरक्षण, स्वास्थ्य, शहरों में पार्किंग जैसी ज्वलंत समस्याओं के समाधान ढूंढना भी शामिल है। अभी कुछ दिन पहले मुझे नंदन नीलेकणि से मिलने का मौका मिला। मुझे लगता है, उनके द्वारा दिया गया लेवल प्लेयिंग फील्ड (सबके लिए समान अवसर) का विचार आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत आवश्यक है। विशेषकर भारत जैसे देश के लिए, जहां हम विश्व की 18 प्रतिशत मानवता के जीवन में सामाजिक-आर्थिक क्रांति लाना चाहते हैं।

विकल्प नहीं, अनिवार्यता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नवाचार की महत्ता बताते हुए कहा कि अब नवाचार विकल्प नहीं, अनिवार्यता है। देश को महाशक्ति के रूप में विकसित करने में नवाचार की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और इसे जन-जन तक ले जाने में मूल भूमिका शिक्षकों की है। जितनी जल्दी हम इस नवाचार रूपी मंत्र को समझ जाएं उतनी जल्दी हम शैक्षिक उत्कृष्टता भी प्राप्त कर सकते हैं। भारत की शिक्षा में नव प्रवर्तन, शोध, अनुसंधान का वातावरण विकसित करना न केवल शैक्षिक उन्नयन के लिए आवश्यक है बल्कि नव भारत के निर्माण के लिए भी यह एक जरूरी शर्त है।[16]

संदर्भ

1. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
2. https://en.wikipedia.org/wiki/National_Education_Policy_2020
3. Puri, Natasha (30 August 2019). A Review of the National Education Policy of the Government of India - The Need for Data and Dynamism in the 21st Century. SSRN.
4. Vedhathiri, Thanikachalam (January 2020). "Critical Assessment of Draft Indian National Education Policy 2019 with Respect to National Institutes of Technical Teachers Training and Research". Journal of Engineering Education, 33
5. https://mgmu.ac.in/wp-content/uploads/NEP-Indias-New-Education-Policy 2020-final.pdf
6. http://s3-ap-southeast-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/volume 10/volume10-issue2(5)/33.pdf
7. Kumar. K. (2005). Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review 2. Draft National Education Policy 2019.
8. https://innovate.mygov.in/wpcontent/uploads/2019/06/mygov 15596510111.pdf 3. National Education Policy 2020.

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

9. https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/ NEP_Final_English.pdf referred on 10/08/2020

10. प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की मांग पूरी करेगी नई शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
12. प्रो. के. एल शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण, पृष्ट संख्या 2, 24 अगस्त 2020
13. गंगवाल सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला, दैनिक नवज्योति पृष्ट संख्या 22 अगस्त 2020
14. राजस्थान पत्रिका नागौर, 28 जनवरी 2020, सम्पादकीय पृष्टः
15. तन्खा वरूण, सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता, राजस्थान पत्रिका नागौर, 26 अगस्त 2020, सम्पादकीय पृष्ट
16. सिंह दुर्गेश, क्रॉनिकल मासिक पत्रिका, मई 2020, पृष्ट संख्या 80-81

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 6.421

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com